रस

- रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक – भरतमुनि
- रस को काव्य की आत्मा के रुप में मान्यता दी – विश्वनाथ ने
- रस निरुपण के प्रथम व्याख्याता एवं रस निरुपण का प्रथम ग्रन्थ–भरतमुनि, नाट्यशास्त्र
- रस को काव्य की आत्मा या प्राणतत्व माना जाता है।
- श्रृंगार रस को 'रसराज/रसपति' कहा जाता है।
- नाटक में 8 ही रस माने जाते हैं, क्योंकि वहां शांत को रस में नहीं गिना जाता। भरत मुनि ने रसों की संख्या 8 मानी है।
- रस व उनके प्रस्तोता
  प्रथम8 रस – भरतमुनि
  शान्त रस – उद्भट
  वात्सल्य – विश्वनाथ
  भक्ति – रुपगोस्वामी
  प्रेयान – रुद्रट
- आचार्य व उनके अनुसार मूल रस
  भवभूति – करुण रस
  भोजराज – श्रृंगार रस
  नारायण पण्डित – आश्चर्य रस
  रुपगोस्वामी – मधुर रस
  अभिनव गुप्त – शान्त रस
- रस काव्य का मूल आधार 'प्राणतत्व' अथवा 'आत्मा' है, रस का संबंध 'सृ' धातु से माना गया हैं जिसका अर्थ है जो बहता है, अर्थात जो भाव रुप में ह्रदय में बहता है उसी को रस कहते हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार रस शब्द 'रस' धातु और 'अच्' प्रत्यय के योग से बना है। जिसका अर्थ है – जो बहे अथवा जो आस्वादित किया जा सकता है।

रस	स्थायी भाव	रस	स्थायी भाव
श्रृंगार	रति	हास्य	हास
करुण	शोक	वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध	भयानक	भय
अद्भुत	आश्चर्य, विस्मय	वीभत्स	जुगुप्सा
शांत	निर्वेद या निवृत्ति	वात्सल्य	वत्सल्य रति
भक्ति रस	भगवतविषयक रति/अनुराग		

रस सम्बन्धी विविध तथ्य

- श्रृंगार रस को 'रसराज/रसपति' कहा जाता है।
- नाटक में आठ ही रस माने जाते हैं क्योंकि वहाँ शान्त को रस नहीं गिना जाता। भरतमुनि ने रसों की संख्या 8 माना है।
- श्रृंगार रस के व्यापक दायरे में वात्सल रस व भक्तिरस आ जाते हैं इसीलिए रसों की संख्या 9 ही मानना ज्यादा उपयुक्त है।
- रसों की संख्या 9 है, जिन्हें 'नवरस' कहा जाता है। मूलतः 'नवरस' ही माने जाते हैं।

रस : एक दृष्टि में

- रस के अंग हैं –4
- स्थायी भाव है – प्रधान भाव
- स्थायी भाव की संख्या है –9
- स्थायी भाव की मान्यता है –11
- रसों की संख्या है –11
- विभाव के भेद हैं –2
- विभाव के कौन भेद हैं –
  1. आलंबन विभाव
  2. उद्दीपन विभाव
- आलंबन विभाव के भेद हैं –2
- आलंबन विभाव के कौन भेद हैं –
  1. आश्रयालंबन 2. विषयालंबन
- अनुभाव का अर्थ है – भाव के पीछे उत्पन्न होने वाला।
- अनुभाव के भेद हैं –4

- अनुभाव के कौन भेद हैं –
  1. कायिक, 2. वाचिक3. आहार्य, 4. सात्विक
- सात्विक अनुभव के भेद हैं–8
- सात्विक के कौन भेद हैं –
  1. स्तंभ 2. स्वेद 3.रोमांच4. स्वरभंग, 5.कम्प, 6. वैवर्ण्य7. अश्रु8. प्रलय

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

- रसराज – शृंगार रस
- उधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं।
  हंससुता की सुन्दर कगरी और द्रुमन की छाँही।। – शृंगार रस
- हिंदी साहित्य का नौंवा रस – शांत रस
- "उस काल मारे क्रोध के,
  तन कांपने उसका लगा।
  मानो हवा के जोर,,
  से सोता हुआ सागर जगा।।" – रौद्र रस
- रौद्र रस का स्थायी भाव – क्रोध
- वीभत्स रस का स्थायी भाव –जुगुप्सा/घृणा
- शोभित कर नवनीत लिए
  घुटरुनि चलत रेनु तन मण्डित
  मुख दधि लेप किए –वात्सल्य रस
- भरत मुनि के अनुसार रसों की संख्या –आठ
- काव्य में कितने रस हैं? –(9) रस

परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तर

- शृंगार रस का स्थायी भाव –रति
- शांत रस का स्थायी भाव –निर्वेद
- कवि बिहारी मुख्यतः किस रस के कवि हैं? –शृंगार रस
- हिंदी साहित्य का नौंवा रस – शांत रस
- रसोत्पत्ति में आश्रय की चेष्टाएँ क्या कही जाती हैं? –अनुभाव
- प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है? –शोक
- विस्मय का स्थायी भाव किस रस में होता है –अद्भुत
- अति मलीन वृषभानुकुमारी। –विप्रलंभ शृंगार
- सर्वश्रेष्ठ रस किसे माना जाता है? –शृंगार रस

EduFull.com